शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक 26-11-2020 वर्ग - BA-III

वस्तुतः नवीन आर्थिक नीति द्वारा जो अर्थ-व्यवस्था अपनाई गई, वह मिश्रित प्रकार की अर्थव्यवस्था थी। इसमें पूँजीवादी और समाजवादी दोनों प्रकार की शक्तियाँ विद्यमान थी तथा इसका अंतिम उद्देश्य समाजवाद था। लेनिन ने इसकी व्याख्या 'संक्रमणकालीन मिश्रित प्रणाली' के रूप में की तथा इसे राजकीय पूँजीवाद की संज्ञा दी। लेनिन ने बताया कि राजकीय पूँजीवाद की व्यवस्था अनिवार्य रूप से संक्रमणकालीन होगी, क्योंकि इसके अन्तर्गत विभिन्न परस्पर-विरोधी शक्तियों का समावेश है। ऐसी व्यवस्था में या तो पूँजीवादी शक्तियाँ हावी हो जाती हैं या समाजवादी शक्तियाँ। परन्तु लेनिन विवेकपूर्ण ढंग से समाजवादी शक्तियों को विजयी बनाना चाहता था। इसीलिए किसी भी समय नवीन आर्थिक नीति या उसके सिद्धान्त न तो स्थिर रहे और न ही उन्हें स्थायी जड़े पकड़ने का अवसर ही मिल

पाया। देश की परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार नवीन आर्थिक नीति का रूप और गुण बदला जाता रहा।

गृह-युद्ध के पश्चात सामरिक साम्यवाद की नीति का परित्याग तथा राजकीय पूँजीवाद की नीति का अनुसरण सोवियत सरकार की विवशता थी। सामरिक साम्यवाद की अवधि में रूस की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था अस्त-व्यस्त हो चुकी थी। कृषि एवं उद्योग के उत्पादन में भारी गिरावट विद्यमान थी। विदेशी व्यापार लगभग समाप्त हो गया था। अनिवार्य अधिग्रहण की नीति के कारण किसानों में भारी असंतोष व्याप्त था। किसानों और मजदूरों के बीच मैत्री संबंधों (जो बोल्शेविक क्रांति के आधार स्तंभ थे) में दरार पड़ चुकी थी।

इन परिस्थितियों में सोवियत सरकार के लिए सामरिक साम्यवाद की नीति का परित्याग उसी प्रकार आवश्यक था, जिस प्रकार गृह-युद्ध के समय सामरिक साम्यवाद की नीति का अनुसरण आवश्यक था। मौरिस डॉब के शब्दों में, "समाजवादी समाज के प्रति लेनिन

का स्थगन तथा 1921 में संक्रमणकालीन अर्थ-व्यवस्था की कष्टदायी समस्याओं के प्रति उसकी धारना ज्वलंत यथार्थवाद से बनी थी। लेनिन की धारणा मार्क्स के इस कथन के अनुरूप थी कि न्याय के सिद्धान्त तात्कालिक आर्थिक दशाओं से ऊपर नहीं उठ सकते।" सोवियत संघ की साम्यवादी पार्टी के इतिहास में नवीन आर्थिक नीति अपनाए जाने का कारण इन शब्दों में व्यक्त किया गया है। "सामरिक साम्य-वाद गाँवों और शहरों में पूँजीवादी तत्वों के किलों पर सीधे आक्रमण द्वारा उन्हें हड़प लेने का प्रयास था। इस आक्रमण में साम्यवादी पार्टी बहुत आगे निकल गई तथा अपने आधार से ही सम्बन्ध तोड़ने की जोखिम उठाने लगी। गृह-युद्ध की समाप्ति पर लेनिन ने इस कार्य से थोड़ी निवृति चाहिए, लौटकर आधार के समीप आना चाहा था तथा पूँजीवादी शक्तियों के किलों की घेराबन्दी का धीमा तरीका अपनाना चाहा, ताकि शक्ति बटोरकर पुनः आक्रमण किया जा सके।" अतः नवीन आर्थिक नीति लक्ष्य (समाजवाद) की ओर से कदम आगे

बढ़ने के लिए एक कदम पीछे हटने की नीति थी।

नवीन आर्थिक नीति का परित्याग — गृह-युद्ध के समय सोवियत सरकार द्वारा अपनाई गई 'सामरिक साम्यवाद की नीति' के विनाश ने स्पष्ट कर दिया था कि पूँजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण (जिसके लिए सैद्धान्तिक ढाँचे में परिवर्तन आवश्यक है) धीरे-धीरे ही संभव है। अतः गृहयुद्ध की समाप्ति पर सरकार ने 'मिश्रित आर्थिक नीति' अपनाई। अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों को सरकारी प्रभुत्व में रखते हुए कृषि, लघु उद्योग और फुटकर व्यापार के क्षेत्र में पूँजीवादी शक्तियों का नियंत्रित प्रयोग किया गया। कहीं पूँजीवादी शक्तियाँ सिरकुश न बन जायें, इसके लिए पूँजीवादी शक्तियों को संयोजित करने की व्यवस्था की गई। कुल मिलाकर, मिश्रित (या नवीन) आर्थिक नीति का उद्देश्य समाजवादी व्यवस्था की ~~उद्देश्य~~ स्थापना के लिए आवश्यक मार्ग की तैयारी करना था। 1928 में प्रथम पंचवर्षीय योजना (केन्द्र द्वारा निर्देशित) लागू करते हुए सरकार ने मिश्रित आर्थिक नीति का परित्याग किया। इसकी योजना के अन्त (1937) तक राजकीय —

पूँजीवाद के समय की मिश्रित अर्थव्यवस्था लुप्त हो गई तथा उसके स्थान पर समाजवादी अर्थव्यवस्था स्थापित हुई, जो बोल्शेविक क्रांति का प्रधान उद्देश्य था। 1936 में लागू नए संविधान की धारा 4 में कहा गया, "सोवियत संघ के आर्थिक आधार में समाजवादी आर्थिक प्रणाली तथा उत्पत्ति के साधनों एवं उपकरणों पर समाजवादी स्वामित्व (जिसकी स्थापना पूँजीवादी प्रणाली के साधनों एवं उपकरणों के तरलीकरण, पूँजीवादी आर्थिक उत्पादन पर निजी स्वामित्व के उन्मूलन तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की समाप्ति द्वारा सम्पन्न हुई।) के समावेश की घोषणा की जाती है।" रूस की तीसरी योजना का उद्देश्य समाजवादी व्यवस्था को साम्यवादी व्यवस्था में परिवर्तित करना था।